पश्चिम की ओर

लेखक: जीन वैन लीवेन, चित्र: टॉमस बी एलेन

हिंदी: नीला त्रिवेदी



एक सरल, सुंदर, लिखित सामग्री जिस में अग्रिणी युवा अमेरिकन का असाधारण भावनात्मक चित्रण और दिल दहला देने वाली कहानियाँ खुलती हैं। जब उन की लंबी यात्रा शुरू होती है, सात साल की हैना, और उस का परिवार अपना घर और दोस्तों को छोड़ कर, पश्चिम की ओर अपनी घोड़ा गाड़ी में चल पड़ते हैं, एक नई ज़िंदगी शुरू करने के लिये। हैना बताती है सितारों के नीचे सोने के बारे में, डरावने तूफ़ानों के बारे में, नदियाँ भी इतनी चौड़ी और गहरी थीं कि घोड़े जो उन की गाड़ी को खींच रहे थे, उन्हें भी तैरना पड़ा और पीछे उन की गाय को भी। इन सब का वर्णन और दूसरे यादगार समय को बहुत ही सजीव, सुंदर, सूक्ष्म बिंबात्मकता से चित्रित किया है। युवा पाठक इन शानदार चुनौतियों का सामना करने वाला अग्रिणी परिवार, उन का पेहला मुश्किल साल अमेरिका के पश्चिम में और उस का दिल छूने वाला लेख पढ़ कर रोमांचित हो जायेंगे।

पश्चिम की ओर

लेखक: जीन वैन लीवेन, चित्र: टॉमस बी एलेन

हिंदी: नीला त्रिवेदी



उन सभी बहादुर परिवारों की याद में जो अपने घरबार छोड़ कर एक नई ज़िंदगी के लिये पश्चिम की ओर चल पड़े।

जी. वी. ल.

मेलिस्सा और लुई के लिये

टी. बी. ए.

सभी हिंदी भाषी बच्चों के लिये

नि. त्रि.





एक दिन, वसंत ऋतु की शुरुआत में, हमारे पास जो भी सामान था सब बाँध कर हमारी घोड़ा गाड़ी में रख दिया। हमारी दूध देने वाली गाय, सैडी, को गाड़ी के पीछे बाँध दिया और नया घर ढूंढने के लिये चल पड़े। पश्चिम की ओर!



हम पाँच लोग थे। पापा और माँ; मै, हैना, अभी सात साल की हुई; मेरा छोटा भाई जेक; रिबेका, एक गोलमटोल बच्ची जिसके पीले घुंघराले बाल हैं।



माँ बहुत रोई। वे अपनी तीन बहनें, सारा फर्नीचर और पियानो, जिसे बजाना उन्हें बहुत अच्छा लगता था, सब छोड़ के जा रही थीं। लेकिन पापा ने कहा कि हम ऐसी जगह जा रहे हैं जहां हम जो भी उगाना चाहें, उगेगा और हमारा खेत इतना बड़ा होगा जितनी दूर हमारी नजर जा सके।

हम उस शहर को जिसे हम अच्छी तरह जानते थे, पीछे छोड़ आये। वे जंगल और पर्वत भी। हम चलते रहे उस उछलती और झूलती हुई चरमराती गाड़ी में, दिन ब दिन।

रात को माँ ने अलाव में खाना बनाया और हम एक दूसरे के बहुत करीब गाड़ी के फर्श पर सोये जहाँ से हमे तारे टिमटिमाते हुए दिख रहे थे, जहाँ से कैनवास की छत खुली हुई थी।





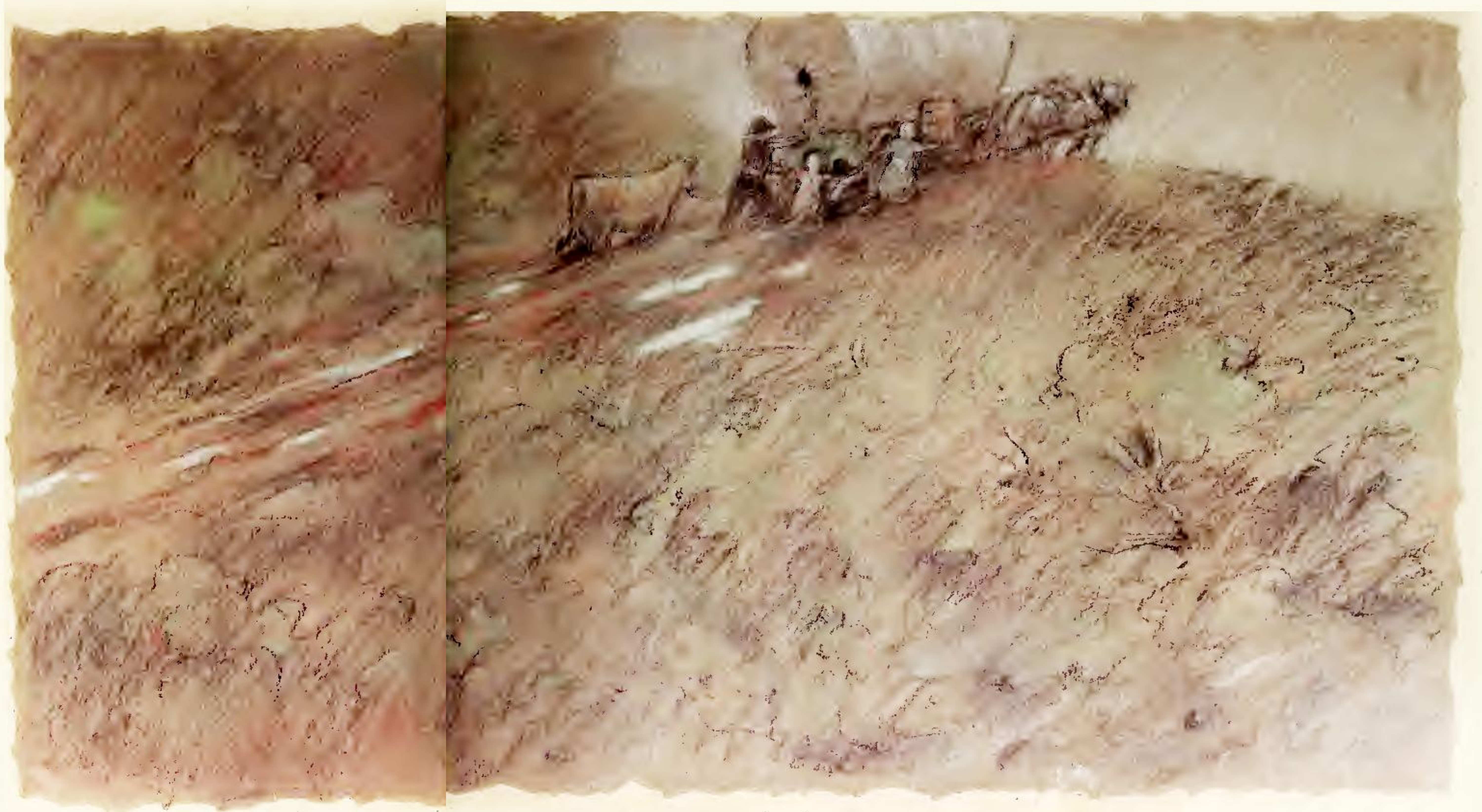

हमारी गाड़ी में ये सब था - कंबल, तकिये और रजाई; माँ की सब से पसंदीदा दोलन कुर्सी; कपड़ों से भरे संदूक; खाने से भरा पीपा; एक रसोई का स्टोव; तांबे की थालियों का डिब्बा; माँ के सारे रसोई के बर्तन; पापा के सारे औज़ार; एक बाइबल; एक राइफल और एक चरखा।

हमारे लिये तो जगह ही नहीं थी!

कभी कभी बारिश होती थी। हमारी गाड़ी मिट्टी में फंस जाती थी। और हम सब को बाहर निकल के धक्का मारना पड़ता था। एक बार तो इतनी बारिश हुई कि हमारी गाड़ी से रिसाव होने लगा।

उस रात हम गीले बिस्तर पर गीले कपड़ों में ही सो गये बिना कुछ खाये। रिबेका रोई और जेक ने कहा उसे वापस घर जाना है। माँ ने कुछ नहीं कहा लेकिन मुझे लगता है उन्हें भी हमारे जैसा ही महसूस हुआ था।

हम सब थक गए थे उस झूलती गाड़ी से, धूल से और एक ही दृश्य रोज़ रोज़ देख कर। जेक गाड़ी से गिर गया और उसे हाथ में चोट लगी। रिबेका को सर्दी लग गई। वह पूरी रात खांसती रही। माँ बहुत चिंतित लग रही थीं लेकिन हम फिर भी चलते रहे। पश्चिम की ओर।





हम एक नदी के पास आये जो बहुत चौड़ी थी और पूरी मिट्टी से भरी। "हम इसे पार कैसे करेंगे?" मै ने पापा से पूछा।

"ये घोड़े हमे ले के जायेंगे," पापा ने कहा।

पहले पानी घोड़ों के घुटनों तक आया और फिर उन की छाती तक!



अचानक पापा चिल्लाये, "अच्छी तरह से पकड़ के रखना।"

घोड़े तैर रहे थे। पानी गाड़ी के अंदर घुस गया था। माँ ने मुझे तब तक कस के पकड़कर रखा जब तक घोड़ों के पैर वापस ज़मीन को छूने लगे। हम ने नदी पार कर ली थी।

नदी की दूसरी तरफ ज़मीन एक दम समतल थी। कोई पेड़ नहीं थे। न कोई झाड़ी। ना ही कोई पत्थर। कुछ नहीं, सिर्फ हरा लहराता हुआ घास, नीला आसमान और फुसफुसाती हवा। ऐसा लग रहा था बहुत ही खाली और अकेलेपन से भरी जगह है। लेकिन पापा ने कहा, "इसी जमीन को तो हम ढूंढ रहे थे।"

जैसे सूरज डूब रहा था, हम ऐसी जगह पर पहुँचे जहाँ जंगली फूल खिल रहे थे। कुछ ढेर गुलाबी, कुछ ढेर जमुनी और नीले, जैसे मुलायम तकिए हों।

"देखो," मां ने मुस्कुराते हुए कहा। और पापा ने कहा, "यही जगह है जहाँ हम अपना घर बनाएंगे।"



दूसरे दिन हम ने शुरुआत की। पापा घोड़े ले कर चले गये। जब वे वापस आए तो खाड़ी से अपने साथ एक कुंदा ले के आये। बहुत दिनों तक उन्होंने काम किया। धीरे धीरे माँ भी मदद करती थी। उन्होंने दीवारें, छत, और दरवाज़ा बना लिया।



अंत में उन्होंने माँ की दोलन कुर्सी ले के हमारी नई आग तापने की जगह के पास रुख दी। सिर्फ एक कमरा था, मिट्टी का फर्श था, लेकिन आखिर में हम वापस एक घर में सोये।







माँ ने बागबानी की। जेक खाड़ी से पानी ले के आया सभी धोने के काम के लिये। मैंने छोटी बच्ची का ध्यान रखा, फर्श पर झाड़ू लगाया और माँ की सहायता की, खिड़की पर चेक वाले पर्दे लगाने में।

"ये देखो," माँ ने कहा, "अब हम मेहमानों के लिये तैयार हैं।"

लेकिन कोई मेहमान नहीं आये। हम बिल्कुल अकेले थे उस विशाल घास के मैदान में।



पापा वापस शहर चले गये, मीलों दूर, बहुत दूर। हम तीन दिनों तक देखते रहे, इंतज़ार करते रहे और फिर पापा वापस आये। वे आटा, बेकन और छह भेड़ ले के आये। और इन के बदले उन्होंने हमारा एक घोड़ा बेच दिया। हमारे लिए एक आश्चर्य था - सच्ची सफेद चीनी! माँ ने एक केक बनाया और मुझे अपने पुराने घर की वापस याद आ गई।



गर्मी आई। गरम हवाएँ बहने लगी। पापा खरगोश के शिकार के लिए चले गये। जेक और मैं, खाड़ी के पास गये और कुछ बेरियां तोड़ के ले आये।



माँ घास पर भेड़ों के साथ सो गयी। हम उन्हें ढूंढने लगे और जब वे मिली तो उन्होंने कहा, "अरे रे, यह तो बहुत ही सूनी जगह है।"

दिन ब दिन सूर्य जैसे नीचे आ रहा हो, हमारे छोटे से घर को सेकता हुआ, बाग के पौधों को सूखाता हुआ। इतनी गर्मी थी कि कुछ भी हिल नहीं रहा था, हवा भी नहीं।

"काश एक पेड़ की छाँव होती हमारे लिये," माँ ने कहा।

एक दोपहर को, जब जेक और मैं, खाड़ी के पास थे, काले बादलों ने सूर्य को ढक दिया। बादल गरजने लगे और बिजली कड़कने लगी। हम दौड़े घर की तरफ। लेकिन घर पहुँचने से पहले ही ओले लुढ़कते हुए आकाश से आये, बड़े और गोल और कंचे जैसे सख्त।

"जल्दी," मै चिल्लाई, "बाल्टियां।" हम ने उन्हें सिर पर रखा और भागते रहे। माँ दरवाज़े पर हमारा इंतजार कर रहीं थी।

"भगवान का लाख लाख शुक्रिया! तुम दोनों सुरक्षित हो।"



तूफ़ान खत्म होने के बाद, मां का बाग एक दम जैसे कुचल कर समतल हो गया हो।

"ज़मीन अच्छी है," उन्होंने कहा, "लेकिन मौसम कठोर है।"

"कोई बात नहीं," पापा ने कहा,"वसंत ऋतु में हम फिर से वृक्षारोपण करेंगे।"





माँ डोनट्स तल रही थीं और जेक और मैं मिट्टी के फर्श पर अपनी पढ़ाई कर रहे थे। तब मेहमान आये! आदिवासी! वे इतने डरावने थे कि जेक पलंग के नीचे रेंगता हुआ चला गया और मैं, दोलन कुर्सी के पीछे छुप गयी। मेरे घुटने डर से कांप रहे थे। लेकिन माँ मुस्कुराई। उन्होंने उन में से एक आदिवासी को एक डोनट दिया। वह मुस्कुराया। मां डॉन्ट बनाती रहीं और वे खाते रहे जब तक पापा घर आये। उसके बाद वे चले गये।



हवा ठंडी होने लगी। मां ने आलू, बेरियां, और कुछ बादाम भर के रख लिये, लंबी सर्दियों के लिये। पापा हिरन का शिकार करने गए थे। वे वापस श्री स्वेंसन के साथ आये। वे रात को खाने तक रुके। खाने के बाद उन्होंने अपनी बांसुरी बजाई और मां आग के पास बैठ कर गाती रहीं। और फिर वह घास का मैदान खाली नहीं रहा।

अब हमें एक पड़ोसी मिल गया था!

"क्या लोग यहाँ क्रिसमस मनाते हैं?" जेक ने पूछा। यह सवाल तो मेरे ज़हन में भी था।

मां ने कहा, "हाँ, बिल्कुल।"

इस लिए हम ने चिमनी पर अपने स्टॉकिंग लटका दिये। रिबेका को एक कप, जेक को एक सिटी और मुझे "नैली" नाम की एक गुड़िया जिस की पीली चोटियाँ थीं मिलीं।

रात को हम ने जंगली टर्की खायी। मां ने मुरब्बा भी खोल दिया जो उन्होंने पूरे साल बचा के रखा था।





अब बर्फीली हवाएँ दीवारों की दरारों में से आने लगी। हमारे पास जितने भी कपड़े थे, हम ने सब पहन लिये और आग के पास भीड़ लगा के बैठ गये। एक दिन तो इतनी ठंड थी कि माँ की ताजा बनाई रोटियां भी ठोस हो कर जम गयी। और फिर बर्फ गिरने लगी।

तीन दिन और तीन रात बर्फबारी चली। पापा ने एक रस्सी घर से अस्तबल तक बांधी ताकि जानवरों को खाना खिलाने के लिये जाना आसान हो जाये।

जेक और मै ने अपनी पढ़ाई की और माँ ने मुझे मेरी रजाई सिलने में मदद की। और इन सब के दौरान हम सब बाहर हवा की डरावनी गर्जना सुन रहे थे।

अंत में सब कुछ स्थिर हो गया। जब बाहर देखा तो कहीं भी लकड़ियों का ढेर नहीं दिख रहा था, न ही अस्तबल, न आसमान, कुछ नहीं सिर्फ बर्फ जो हमारे छोटे से घर की छत से खिसक रहा था।



वह एक लंबी, ठंडी सर्दियाँ थीं। हमारे पास खाने को सिर्फ आलू, ठोस बिस्कुट और बादाम थे। रिबेका रोई क्योंकि उस को भूख लगी थी। एक दिन मां ने आलू गिने और कहा, "सिर्फ छ बचे हैं।"

लेकिन फिर धीरे धीरे बर्फ पिघलने लगी। हर रोज़ हमारी खिड़की के नीचे जमी हुई बर्फ कम होती रही। पापा ने अपनी राइफल उतारी और वापस शिकार करने चले गये। और उस रात, खरगोश के स्टू की महक से हमारा घर एक बार फिर से गर्म हो गया।





एक सुबह जब घास हरा होने लगा था, पापा ने कहा, "यह बोने का समय है।" उन्होंने हमारे घोड़े को हल से बाँध दिया और उस कठोर घास को काटते हुए, नीचे की उपजाऊ मिट्टी को खोद दिया। वे काफी दिन तक काम करते रहे, लंबी सीधी पंक्तियों में। फिर माँ ने बीज डाले और जेक और मैं ने उन्हें मिट्टी से ढक दिया। सूरज फिर चमका। बीज अंकुरित हुए और हमारी चारों तरफ, जहां तक मेरी आँखें देख सकती थी, हमारा खेत था।

माँ का जन्म दिन था। जेक और मैने मेज़ के लिये कुछ फूल चुने। पापा ने हम सब को आश्चर्यचकित कर दिया। वे खाड़ी में से एक छोटा सा पेड़ ले आये जो हमारे घर के सामने दरवाज़े के पास स्थापित करना था।

"अगले साल अगर हमारी फसल अच्छी हुई," उन्होंने कहा, "तो हम एक पियानो खरीदेंगे।"

श्री स्वेंसन रात को भोज के लिए आये। एक और आश्चर्य के साथ - उन की पत्नी। उन्होंने हाल ही में शादी की थी।

"स्वागत है आप का हमारे घर में," माँ ने कहा।

हम ने माँ का बनाया खाना खाया और श्रीमती स्वेंसन की पूरब की कहानियां सुनी और आग तापते हुए गाने गाये। बाहर हल्की हवा नई फसल को हवा दे रही थी।





मैं ने माँ को उनकी दोलन कुर्सी में बैठे देखा। रिबेका सो रही थी। जेक पापा के घुटनों पर झुक के बैठा था।

और हमारा घर अब घर सा लग रहा था।

